ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

हिंदी ऑनलाइन कक्षा में आप सभी का स्वागत है|

कक्षा -8

हिन्दी

पाठ -5

गूदड़ साँईं

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

7 गूदड़ साँईं

चिंतन-मनन

यह एक सुप्रसिद्ध बाल मनोवैज्ञानिक कहानी है। इसमें गरीब साँईं बच्चों में दुनिया देखता है, उसके अनुसार– बच्चे भगवान का स्वरूप होते हैं। उनके साथ खेलना, हँसना सबको अच्छा लगता है। भगवान के रूप को सिर्फ़ बच्चों में देखा जा सकता है। वास्तव में बच्चों से ही जीवन सुखमय बनता है। यह कहानी मर्म को छू जाती है।

"साँईं! ओ साँईं!" एक लड़के ने पुकारा। साँईं घूम पड़ा। उसने देखा कि एक आठ-नौ वर्ष का बालक उसे पुकार रहा है।

आज कई दिनों बाद उस मुहल्ले में साँईं दिखाई पड़ा है। साँईं बैरागी था–माया नहीं, मोह नहीं, परंतु कुछ दिनों से उसकी आदत पड़ गई थी कि दोपहर को मोहन के घर के सामने जाता तथा अपने दो-तीन गूदड़ बड़े यत्न से रखकर उन्हीं पर बैठ जाता और मोहन से बातें करता। जब कभी मोहन उसे गरीब एवं भिखमंगा जानकर, माँ से ज़िद करके तथा पिता की नज़र बचाकर, कुछ साग-रोटी लाकर दे देता था, तब उस साँईं के मुख पर पवित्र मैत्री के भावों का साम्राज्य छा जाता था। गूदड़ साँईं उस समय दस वर्ष के बालक के समान अभिमान, सराहना और उलाहनों के आदान-प्रदान के बाद उसे बड़े चाव से खा लेता। मोहन की दी हुई एक रोटी उसकी अक्षय तृप्ति का कारण होती थी।

एक दिन मोहन के पिता ने उसे साँईं के साथ देख लिया था। वे बहुत बिगड़े। वे पाश्चात्य शिक्षा एवं सभ्यता के रंग में रँगे हुए, पूरी तरह उसी में सराबोर थे। उन्हें सभी फकीर ढोंगी लगते थे। सभी फकीरों से उन्हें स्वाभाविक चिढ़ थी। मोहन को उन्होंने बहुत डाँटा और कहा कि वह इस प्रकार के लोगों से दूर रहे तथा उनसे कभी बात न करे। साँईं यह सुनकर हँस पड़ा और चला गया।

उसके कई दिन बाद तक वह साँईं आस-पास भी न दिखा। आज कई दिन बाद वह साँईं आया और जान-बूझकर उस बालक के मकान की ओर नहीं गया। मोहन पढ़ने गया हुआ था। पढ़कर वापस आते समय उसे साँईं दिखाई दिया। मोहन ने साँईं को पुकारा। उसकी पुकार पर साँईं लौट आया। मोहन ने उससे पूछा–"तुम आजकल आते नहीं?"

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

"तुम्हारे बाबा बिगड़ते हैं।"

"नहीं, तुम आकर रोटी ले जाया करो।"

"भूख नहीं लगती है।"

"अच्छा, कल जरूर आना, भूलना मत।"

इतने में एक अन्य लड़का साँई का गूदड़ खींचकर भागा। गूदड़ लेने के लिए साँई उस लड़के के पीछे दौड़ा। मोहन देखता रहा, साँई आँखों से ओझल हो गया। चौराहे तक दौड़ते-दौड़ते साँई को ठोकर लगी और वह गिर पड़ा। सिर फटने के कारण खून बहने लगा। साँई को खिझाने के लिए जो लड़का उसका गूदड़ लेकर भागा था, वह डरकर ठिठक गया। वह केवल मनोरंजन के लिए गूदड़ लेकर भागा था। उसका उद्देश्य साँई को नुकसान पहुँचाना नहीं था। दूसरी ओर से मोहन के पिता आ रहे थे। उन्होंने उस लड़के को पकड़ लिया और उसके सिर पर चपत लगाई। साँई अपना दुख भूलकर उस लड़के को बचाने लगा। वह बोला–"मत मारो, मत मारो, बच्चे को कहीं चोट लग जाएगी।" साँई उस लड़के को छुड़ाने लगा। मोहन के पिता ने साँई से कहा–"फिर तुम उस चिथड़े के पीछे दौड़ते क्यों थे?"

सिर फटने पर भी जिस साँई का रोना नहीं छूटा था, वही साँई लड़के को रोते देखकर रोने लगा। उसने मोहन के पिता से कहा–"मेरे पास दूसरी कौन वस्तु है, जिसे देकर इन 'रामस्वरूप' भगवान को प्रसन्न करता?"

"तो क्या तुम इसीलिए गूदड़ रखते हो?"

"इस चिथड़े को लेकर भागते हैं भगवान और मैं उनसे लड़कर छीन लेता हूँ, रखता हूँ फिर उन्हीं से छिनवाने के लिए, उनके मनोविनोद के लिए। सोने का खिलौना तो उचक्के भी छीनते हैं, पर चिथड़ों पर भगवान ही दया करते हैं।"–इतना कहकर बालक का मुँह पोंछते हुए मित्र के समान गलबाहीं डाले हुए साँई चला गया।

मोहन के पिता आश्चर्य से उन्हें देखते रह गए। वह बोले–"गूदड़ साँई! तुम निरे गूदड़ नहीं, गुदड़ी के लाल हो। तुम धन्य हो।"

–जयशंकर प्रसाद

शब्दार्थ-

बैरागी-मोह-माया से दूर
गूदड़-फटा-पुराना गद्दा
साम्राज्य-विशाल राज्य
अक्षय-कभी समाप्त न होने वाला
सराबोर-पूरी तरह से डूबा हूआ
चिथड़े-फटे पुराने कपड़े
गलबाहीं- गले में बाँहें
गुदडी़ का लाल - ऊपर से साधारण किंतु मूल्यवान

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

अर्थबोध-

साँईं बहुत दिनो के बाद इस मोहले में आया था।मोहन घर के सामने वह गूदड़ रख उस पर बैठकर मोहन से बातें करता । मोहन भी माँ से रोटी मांगकर लाता और साँईं को देता । साँईं भी उसे बड़े चाव से खाता है । एक दिन मोहन के पिता ने उसे साँईं के साथ देख लेते हैं और बहुत बिगड़े डाँटा और इस प्रकार के लोगों से दुर रहने के लिए कहते हैं । उसके बाद साँईं उस महोले में दिखाइ नहीं देता है।एक दिन साँईं के साथ मोहन का भेट हो जाता है तो मोहन उसे न आने का कारण पुछता है।साँईं उसे कहते हैं कि 'तुम्हारे बाबाने मना किया है।'उसी समय दुसारा बच्चा साँईं का गूदड़ लेकर भागता है।साँईं भी उस के पिछे भागता है परंतु दुसरे तरफ से मोहन के पिताजी आकर बच्चे को पकड कर मारते देख साँईं अपना कष्ट भूलकर बच्चे को बचाता है । यह देख मोहन के पिताजी आश्चर्य हो जाते हैं।तब साँईं क ... ान व ... कारण ही मैं इनको आपने पा ... पित ... ौर कहते हैं"गूदड़ साँईं! तुम नि ... लाल

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

संबंधित प्रश्न-

१.साँईं के पास क्या था?
२.लड़के का नाम क्या था?
३.लड़का खाने केलिए साँईं को क्या दिया?
४.मोहन के पिताजी साँईं पर गुस्सा क्यों होते थे?
५.साँईं मोहन के घर आना क्यों बंद कर दिया?
६.मोहन के पिताजी क्या देख आश्चर्य हो गए?

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow